ISSN: 0973-0583

नवल किशोर की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना

शिव कुमार

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, रामचन्द्र चन्द्रवंशी विश्वविद्यालय, पलामू (झारखण्ड)

नवल किशोर जी की रचनाओं के अध्ययन से विदित होता है कि उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति तो की ही है, राष्ट्रीय चेतना की भी अभिव्यंजना की है। गंभीरतापूर्वक विचार करने से विदित होता है कि राष्ट्रीय चेतना का मानव-जीवन से बड़ा ही घनिष्ठ संबंध है। सच तो यह है कि 'काव्य जीवन-प्रकृति का अन्तर्दर्शन है। उसकी अनुभूति है। वह अनुभूति कोई भावुकताजन्य स्फूर्ति नहीं, न कोई आध्यात्मिक कल्पना है, बल्कि अखण्ड मानव-जीवन के व्यक्तित्व की अनुभूति है।[1] नवल किशोर जी के काव्य में यह अनुभूति सहज ही व्यक्त हुई है। यही वह अनुभूति है जिसके आधार पर उन्होंने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति की है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि जिस रचनाकार में जितनी ही भावुकता होती है उसकी अनुभूति उतनी ही तीव्र होती है तथा उनकी भाषा भी सहज, सुन्दर एवं प्रभावशालिनी होती है। नवल किशोर जी में यह विशेषता प्रकृत रूप में देखी जा सकती है। डॉ० श्यामसुन्दर दास के शब्दों में, 'साहित्य को हम भाव-जगत का प्रतीक कहते हैं। काव्य में एक-एक व्यक्ति अपनी रुचि तथा शक्ति के अनुसार भावों की एक नियमित मात्र ही एक विशेष भाषा और परिमित शब्द-शक्ति द्वारा प्रकट करता है।'[2] नवल किशोर जी ने अपनी रचनाओं में जिस राष्ट्रीय चेतना की व्यंजना की है वह इसी ढंग की है और इस क्षेत्र में उन्हें सफलता भी मिली है। यहाँ हम यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि 'आधुनिक युग के आरंभ में सर्वप्रथम भारतेन्दु का राष्ट्रीय स्वर सर्वाधिक आकर्षक रूप में उपस्थित हुआ है। उन्होंने राजशक्ति और राष्ट्रभक्ति दोनों की अभिव्यक्ति की है। किन्तु, उनकी आस्था का स्वाभाविक स्वर राष्ट्रीयता के स्वर में ही झंकृत है। उनकी राजभक्ति, परिस्थिति एवं परिवेश की विवशता के कारण प्रकट हुई है, जो स्वाभाविक भी नहीं है। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' ने भारतीय संस्कृति-चेतना को सर्वाधिक मुखर किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी (भारतीय आत्मा), दिनकर ने ओजपूर्ण वाणी में राष्ट्रभावना की अभिव्यंजना में भारतीय जन-मानस को विदेशी शासन के विरुद्ध उत्प्रेरणा दी है। पंत ने भारत-भूमि, भारतीय संस्कृति की करुण स्थिति को 'भारतमाता ग्रामवासिनी' में प्रस्तुत की है, तो उनकी मधुर प्राकृतिक छवि का अंकन भी किया है। निराला ने भारत को सुख-समृद्धि से भर देने के लिए भारत माता का भव्य रूप उपस्थित किया है। प्रसाद ने सांस्कृतिक चेतना के साथ ही भारत-भूमि की चिर-शाश्वत राष्ट्र-प्रवृत्ति का महान चित्र उपस्थित करते हुए भारतीय स्वतंत्रता के निमित्त अमर्त्य वीर पुत्रों का आह्वान किया है। नवल किशोर जी में एक ओर ग्राम्य जीवन के प्रति आकर्षण है तो दूसरी ओर सम्पूर्ण भारत के धर्म-प्रांत, जाति को एक भावनात्मक सूत्र में आबद्ध करने का सफल प्रयास भी परिलक्षित होता है। उन्होंने अति मुखर, उग्र-शौर्यपूर्ण स्वरों में शत्रुओं से जूझने के लिए, भारत के नव निर्माण के लिए, नवीन कल्पना के लिए शौर्य-भाव से जन-मानस को उद्वेलित करने की सफल चेष्टा की है।'

राष्ट्र के कुछ अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्वों में जन, जन-संस्कृति, जन-सभ्यता, राष्ट्र-भूमि, शासन, सम्प्रभुता आदि हैं। नवल किशोर जी ने अपनी रचनाओं में इन सारे तत्त्वों पर विचार किया है। उनके अनुसार प्रत्येक नागरिकों को सुखी-सम्पन्न, सुशिक्षित और सुसंस्कृत होना चाहिए तथा अधिकार और कर्तव्य का समुचित ज्ञान भी होना चाहिए। भारत विश्व में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, लेकिन यहाँ कुछ ऐसी बातें हैं जिससे यहाँ के लोकतंत्र के सामने अनेक समस्याएँ खड़ी हो गई हैं जो राष्ट्रीय भावना के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। आज लगभग 80 प्रतिशत लोग आर्थिक संकटों से जूझ रहे हैं। 'फिर भी भारत विश्व में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहाँ जन (लोक) के जीवन के साथ बर्बर अत्याचार हो रहा है।

जनता की गाढ़ी कमाई जन-प्रतिनिधि, राजनेता, अफसरशाह और उद्योगपति लूट रहे हैं, जिसकी भयद् परिणति है कि गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर हो रहे हैं। अब तो देशभक्ति और देशद्रोह की नयी परिभाषा भी गढ़ी जाने लगी है। जो जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों के पक्ष में बोलेगा वह देश-द्रोही है और जो जनता के खून-पसीने की कमाई लूटकर अपनी तिजोरी भरेगा, सच्चा देश-भक्त होगा।' इसीलिए नवल किशोर जी देश के जन-जन से कह रहे हैं -

'जब अखिल राष्ट्र के लिए एक ही संसद का है प्रावधान,
एक ही उच्चतम न्यायालय है सब जनता के हित समान,
तो क्यों कानून यहाँ रह-रह करके बन जाता है मजाक,
एक ही बात के लिए यहाँ बनते हैं दो-दो संविधान;
जनता अब जुल्म न सह सकती, मैं उसे जगाने आया हूँ,
तुम रहो देखते, भारत को फिर हिन्दुस्तान बना लूँगा।'

देश की स्थिति पर कवि को इतना अधिक दु:ख है कि वह देश के नेताओं से भी कहता है-

'तुम हो रहस्यमय सचमुच ही, चलते हो शतरंजी चालें,
ऊपर से जितने हो सफेद, भीतर से उतने ही काले,
तुमने गाँधी के आदर्शों को टके सेर में बेच दिया,
लुट जाय देश यह किस प्रकार, इस पर ही आज दृष्टि डाले।

***

तुम हो धरती के, किन्तु आज बस नभ की बातें करते हो,
क्षण-क्षण गिरगिट के जैसा तुम तो रंग बदलते फिरते हो,
जनता तुमको पहचान चुकी, अब उसको ठग सकते न,
अधिक केवल अपने स्वार्थ के लिए कानून नया तुम गढ़ते,
हो। घिस गयी तुम्हारी मेघा, झूठा सृजन बन्द कर दो,
अपना,अपने रहने के लिए स्वयं मैं भारत नया बना लूँगा।

ऐसी पंक्तियों द्वारा कवि देश के नागरिकों को सजग और सावधान रहने की प्रेरणा दी है।

नवल किशोर जी की रचनाओं में स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यंजना हुई है। 'नवीन' उनकी एक ऐसी काव्य कृति है जिसमें उनकी राष्ट्रीय भावना पराकाष्ठा पर परिलक्षित होती है।

कवि यह अच्छी तरह जानता है कि जबतक समाज में विषमता रहेगी तबतक स्वस्थ और आदर्श समाज का निर्माण न हो सकेगा। इसीलिए वह भगवान से कहता है-

अब लूट, हत्या, अपहरण के खेल सारे बन्द हो,
योग्यतावाले जन यहाँ पर अब अधिक मत तंग हो,
अब भेद ऊँची और नीची जाति का मिट जाय सब,
हर जगह, हर क्षण सबों में आनन्द ही आनन्द हो।
अब एक जैसा देश के सब जनों का कल्याण हो।
भगवान! भारतवर्ष का फिर से नया निर्माण हो।।'

* * *

'हर रोज दिन में मने होली, रात में दीपावली,
खिलती रहे इस देश के उद्यान में नित नव कली,
सब लोग हो सम्पन्न एवं सुखी अब इस देश में,
हर पुरुष इसका श्याम हो, हर नारियाँ श्यामा लली।
इसकी प्रभा से सदा ज्योतिर्मय समस्त जहान हो।
भगवान! भारतवर्ष का फिर से नया निर्माण हो।''

आश्चर्य की बात है कि अबतक आलोचकों का ध्यान जन-कवि नवल किशोर की ओर क्यों न गया। जबकि उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना शिखर पर है।

इसमें सन्देह नहीं कि उनके हृदय की प्रत्येक धड़कन में राष्ट्रीयता की भावना है। जब देश पर चीनी-आक्रमण हुआ तो बड़े-बड़े कवि लोग चुप थे। जहाँ एक ओर गोपाल सिंह नेपाली देश के कोने-कोने में घुमकर अपने गीतों से जन-जागरण का शंख-नाद किया था वहाँ नवल किशोर जी भी जन-साधारण का पांचजन्य-निनाद कर रहे थे। दिनकर जी जैसे कवि भी चुप थे। उन्होंने चीनी-युद्ध के अन्त में 'परशुराम की प्रतीक्षा' नामक काव्य-पुस्तक की रचना की। नवल किशोर जी ने उनके प्रति लिखा था -

दिनकर! तेरी वह कलम कहाँ?
क्यों आज उगलती आग नहीं,

हर नवयुवकों की नस-नस में
बिजली भरती क्यों आज नहीं?

***

रूक गयी कलम तेरी, मेरी
पर रूकेगी न अरि के भय से,
निज राष्ट्र आज है संकट में
फिर मैं चुप हो बैठूँ कैसे?

राष्ट्र के तत्त्वों में राष्ट्रभाषा का भी बड़ा ही अधिक महत्त्व है। 'जिस देश की अपनी राष्ट्रभाषा नहीं होती, वह देश मुर्दा के समान है। राष्ट्रभाषा के साहित्य में ही किसी देश का गौरवशाली इतिहास और उसकी संस्कृति छिपी होती है। यही कारण है कि कोई विजयी देश अपने विजित देश की भाषा और उसके साहित्य पर सबसे पहले प्रहार करता है और उसके साहित्य को नष्ट कर उस पर अपनी भाषा का भार लाद देता है जिससे विजित देश अपने इतिहास को भूल जाय, अपनी सभ्यता-संस्कृति की विस्मृत कर दे और उस पर अधिक दिनों तक शासन किया जा सके। नवल किशोर जी राष्ट्रभाषा के इस महत्त्व को भली-भाँति जानते थे कि अगर सम्पूर्ण देश की एक ही राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी तो देश एकता के सूत्र में बँधा रहेगा और इसकी स्वतंत्रता पर कोई आँच न आ सकेगा।'

इसमें सन्देह नहीं कि देश के सर्वांगींण विकास के लिए राष्ट्रभाषा का महत्त्व अनुपेक्षणीय है। तभी तो कोई भी विजयी राष्ट्र बहुत अधिक दिनों तक शासन करने के लिए विजित देश पर अपनी भाषा का भार लाद देते हैं। मुस्लिम शासकों ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा की और उर्दू भाषा का भार भारत पर लादने का प्रयास किया। अंग्रेजों के शासन-काल में तो राष्ट्रभाषा हिन्दी को नष्ट कर अंग्रेजी भाषा का प्रचार-प्रसार अंग्रेजों ने किया। अब देश स्वतंत्र हो गया है तो भी हिन्दी राजभाषा तो बन गई, मगर राष्ट्रभाषा अबतक नहीं बन पाई। राष्ट्रभाषा के महत्त्व को दर्शाते हुए साहित्यकार नवल किशोर ने ठीक ही कहा है -

'क्या बतलाऊँ तुम्हें राष्ट्रभाषा हिन्दी की अनुपम महिमा,
यही जान लो, इससे बढ़कर है न किसी भाषा की गरिमा,
और-और भाषाओं का भी तुम प्रसार देखो स्वदेश में,
पर गुरुत्व हिन्दी में ही है और अन्य में तो है लघिमा।
माता के समान यह हिन्दी सब प्रकार से अति हितकर है,
है यह बहुत लाभकर एवं सब प्रकार से श्रेयस्कर है,
बिना राष्ट्रभाषा हिन्दी के हम गुलाम फिर बन जा सकते,
हिन्दी जबतक है तबतक इस भारत का जीवन सुखकर है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि नवल किशोर जी की रचनाओं और उनके गीतों में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। नवल किशोर जी ने अपनी रचनाओं में जिस राष्ट्रीय चेतना की व्यंजना की है वह इसी ढंग की है और इस क्षेत्र में उन्हें सफलता भी मिली है। राष्ट्र के तत्त्वों में राष्ट्रभाषा का भी बड़ा ही अधिक महत्त्व है। 'जिस देश की अपनी राष्ट्रभाषा नहीं होती, वह देश मुर्दा के समान है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. डॉ० नवल किशोर श्रीवास्तव: ललकार,प्रथम संस्करण, दिसम्बर 2000 ई० पृ०.51.59
2. डॉ० नवल किशोर श्रीवास्तव : नन्दनवन,प्रथम संस्करण, 2012 ई०, वैशाली सस्कृति संगम, हाजीपुर (वैशाली) पृ०.51.59
3. डॉ० अभिषेक रंजन : कविवर गोपाल सिहं नेपाली के काव्य में सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना, प्रथम संस्करण, 2019, पृ०. 51-59
4. डॉ० नवल किशोर श्रीवास्तव : भारत दुर्भाग्य, प्रथम संस्करण, जुलाई 2015,पृ०.22
5. डॉ० नवल किशोर श्रीवास्तव : भारती,प्रथम संस्करण, 2001 ई०, वैशाली सस्कृति संगम, हाजीपुर (वैशाली) पृ०.सं.-6
6. प्रो० विश्वनाथ प्रसाद : कला एवं साहित्य: प्रवृति एवं परंपरा,प्रथम संस्करण, नवम्बर 2000 ई०,पृ०. सं.-65
7. डॉ० नवल किशोर श्रीवास्तव : अमर क्रान्ति,प्रथम संस्करण, 2006 ई०, बिहार राज्य वज्जिका विकास परिषद, हाजीपुर, वैशाली पृ०.सं.-51

❖❖❖